विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2566, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 08 दिसंबर, 2022, वर्ष 52, अंक 6

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

किञ्चापि सो कम्मं करोति पापकं, कायेन वाचा उद चेतसा वा।
अभब्बो सो तस्स पटिच्छदाय, अभब्बता दिट्ठपदस्स वुत्ता।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

– खु.नि., खुद्दकपाठपाळि-6-12, रतनसुत्तं.

(स्रोतापन्न अवस्था पर पहुँचा हुआ परमपद द्रष्टा साधक) यदि कभी काया, वाणी या चित्त से कोई पापकर्म कर भी लेता है तो वह उसे छिपा नहीं सकता। (भगवान द्वारा) कहा गया है कि निर्वाण का साक्षात्कार कर लेने वाले (व्यक्ति) के लिये (अपने दुष्कृत को) गोपनीय रख पाना असंभव है। सचमुच! यह भी श्रेष्ठ रत्नत्व है आर्य श्रावक-संघ में। इस सत्य कथन के प्रभाव से स्वस्ति हो! (मंगल हो!!)

महामानव बुद्ध चित्रावली पुस्तक से साभार

महामानव बुद्ध द्वारा सिखाई गयी विपश्यना साधना से संबंधित चित्रावली को "विश्व विपश्यना पगोडा", गोराई, मुंबई की विशाल दर्शक-दीर्घा में दर्शाया गया है। इन चित्रों के कथानक पूज्य गुरुदेव ने स्वयं लिखे/रचे और इनके आधार पर भारतीय चित्रकार श्री कामत ने इन्हें कागज पर रेखांकित करके पूज्य गुरुजी की स्वीकृति से जो चित्र उकेरे, पूज्य गुरुजी के आमंत्रण पर आये बरमी कलाकारों ने दीर्घकाल तक 'विश्व विपश्यना पगोडा' के प्रांगण में रहते हुए अथक परिश्रम करके उन्हें कैनवास पर उतारा। इन चित्रों का पूरा कथानक वहां उपलब्ध एक श्रवण-यंत्र द्वारा दर्शक इच्छित चित्र के सामने खड़े होकर सुन सकते हैं। इन चित्रों की पुस्तकें कई भाषाओं में उपलब्ध हैं। उन्हीं में से कुछ कथानक साधकों के प्रेरणार्थ (बिना चित्र के) यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। — संपादक

यशोधरा

यशोधरा की गुणवत्ता भगवान से अज्ञात नहीं थी। अत: वे स्वयं उसके निवास स्थान के शयनागार में गये। दोनों अग्रश्रावक सारिपुत्र और मौद्गल्यायन को अपने साथ ले गये। महाराज शुद्धोदन भी उनका भिक्षापात्र लिए साथ गये। भगवान ने अपने दोनों प्रमुख शिष्यों से कहा कि राजकन्या यशोधरा चाहे जिस प्रकार उनका वंदन करे, उसे मत रोकना।

कोई नारी एक गृहत्यागी श्रमण अथवा किसी अरहंत पुरुष के शरीर का स्पर्श नहीं कर सकती। पांव का भी नहीं। और यह तो साधारण श्रमण ही नहीं, अरहंत ही नहीं, सम्यक संबुद्ध हैं। कोई नारी, भले उनकी पूर्व पत्नी ही क्यों न हो, उनके शरीर का स्पर्श कैसे कर सकती है? उनके पांव का भी स्पर्श नहीं कर सकती। परंतु महाकारुणिक भगवान के मानस में असीम मैत्री का उत्स फूट पड़ा। देवी यशोधरा आयी और भगवान के सम्मुख बैठ कर उनके पांव पकड़ कर मनचाही वंदना की। किसी ने कोई रुकावट नहीं उत्पन्न की।

इस पर महाराज शुद्धोदन ने देवी यशोधरा की गुणवत्ता का संक्षेप में वर्णन किया। उन्होंने बताया कि —

1. जब राजकुमार सिद्धार्थ ने घर-गृहस्थ त्याग दिया और उसके लौटने की कोई संभावना नहीं रही, तब राजवंश के अनेक राजकुमारों ने इस परित्यक्ता युवती के साथ नया संबंध जोड़ने का प्रस्ताव रखा। परंतु मेरी बेटी ने उनकी ओर नजर उठा कर भी नहीं देखा।

2. मेरी बेटी ने जब सुना कि तुमने श्रमण वेश धारण करते हुए मुंडन कर लिया, तब से इसने भी अपने सिर का मुंडन करवा लिया।

3. जब से सुना कि तुमने सभी राजसी वस्त्रालंकार त्याग कर गेरुए वस्त्र धारण कर लिये हैं, तब से इसने भी मुलायम राजसी वस्त्रालंकार त्याग कर, रूखे गेरुए वस्त्र धारण कर लिये।

4. जब से सुना कि तुम एक वक्त ही भोजन ग्रहण करते हो, तब से यह भी एकाहारी हो गयी।

5. जब से सुना कि तुमने ऊंचे आरामदेह पलंग पर लेटना त्याग दिया है, तब से यह भी नीचे मंच पर सोने लगी।

6. जब से सुना कि तुमने माला, गंध, विलेपन धारण करना त्याग दिया है, तब से इसने भी उन्हें छूआ तक नहीं।

7. जब से सुना कि तुमने नृत्य, गीत, वादन आदि ऐंद्रिय सुखों को त्याग दिया है, तब से इसने भी इनसे मुख मोड़ लिया है।

ऐसा तो होना ही था।

नासमझ तथा विरोधी तत्वों ने ऐसी त्यागमयी सती साध्वी आदर्श पतिपरायणा गृहणी के संबंध में भी अनेक मनगढंत बातें जोड़-जोड़ कर फैला दीं, जिनका उद्देश्य राजकुमार सिद्धार्थ को नितांत निष्ठुर और निर्दयी बताना था— जैसे कि उसने अपनी पत्नी को बिना बताए चुपचाप गृह त्याग दिया। अपनी असहाय पत्नी को बिलखने के लिए छोड़ दिया। पति के उत्तरदायित्व से सर्वथा विमुख हो गया। अपने नवजात शिशु के प्रति सारा दायित्व पत्नी पर छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। यों यशोधरा के पात्र को माध्यम बना कर राजकुमार सिद्धार्थ की निंदा करना ही उनका प्रमुख लक्ष्य रहा।

वैसे पति द्वारा त्यागी जाने पर यशोधरा को दु:ख हुआ ही नहीं, यह कहना भी गलत होगा। लेकिन जो अतिरंजना निंदकों ने फैलायी, वह तथ्यहीन है।

विशाल तिपिटक साहित्य में ऐसा वर्णन कहीं नहीं है कि सिद्धार्थ के गृह त्यागने पर यशोधरा ने विलाप किया हो। केवल उसके पिता और मौसी को अश्रुमुख होकर विलाप करते हुए ही देखा जाता है। यशोधरा को अपने प्रिय पति के प्रति विपुल श्रद्धा थी, भक्ति थी, विश्वास था।

यह कहना गलत है कि सिद्धार्थ ने यकायक घर त्यागने का निर्णय लिया और यशोधरा को इसकी भनक तक नहीं पड़ी। यह सच है कि घर छोड़ते समय सोई हुई यशोधरा को जगा कर सूचित नहीं किया। कारण स्पष्ट था। यशोधरा विलाप करते हुए विरोध न भी करती तो शिशु राहुल का जाग जाना स्वाभाविक था। उसके रोने की आवाज सुन कर घर के और लोगों का, विशेष कर महाराज शुद्धोदन और महाप्रजापती के जाग जाने की आशंका स्पष्ट थी। ऐसी दशा में गृहत्याग कठिन हो सकता था।

परंतु यशोधरा के लिए सिद्धार्थ के गृहत्याग की घटना अनहोनी नहीं थी। दोनों एक ही दिन जनमे थे। अत: समवयस्क थे। दोनों सोलह वर्ष की उम्र में दाम्पत्य बंधन में बँधे थे। दोनों ने एक साथ तेरह वर्ष तक सुखी दाम्पत्य जीवन बिताया था। दोनों में परस्पर प्यार था ही। तेरह वर्ष के दाम्पत्य जीवन में कभी दोनों का झगड़ा हुआ हो, कोई मनमुटाव हुआ हो, ऐसा वर्णन कहीं नहीं मिलता। पत्नी से झगड़ कर अथवा ऊब कर घर त्यागा, यह कहना नितांत मिथ्या होगा।

तेरह वर्ष तक सुखपूर्वक साथ रहने वाले युवा पति-पत्नी एक-दूसरे की मनोवृत्ति को बखूबी समझ रहे थे। एक-दूसरे की विचारधारा से अनभिज्ञ नहीं थे। यह तथ्य दोनों से अनजाना नहीं था कि ज्योतिषियों की भविष्यवाणी के अनुसार और शरीर पर उभरे 32 महापुरुष लक्षणों के अनुसार यदि सिद्धार्थ गृहस्थ रहता तो चक्रवर्ती सम्राट बनता और गृहत्यागी होता तो सम्यक संबुद्ध बनता। यह भी उनसे अज्ञात नहीं रहा होगा कि राज्य-ज्योतिषियों में से केवल एक का ही नहीं, बल्कि परिवार के राजपुरोहित ऋषि काल (असित) देवल का भी यही मत था कि यह सम्राट नहीं, बल्कि सम्यक संबुद्ध ही बनेगा।

29 वर्ष की उम्र बचकाना नहीं होती। दोनों समझदार थे। इस गंभीर विषय पर परस्पर बातचीत अवश्य होती रही होगी। राजकुमार सिद्धार्थ के मन में चक्रवर्ती सम्राट बनने का कोई आकर्षण नहीं था। वह सम्यक संबुद्ध बनना चाहता था। उसकी यह मनोदशा और झुकाव यशोधरा से छिपा नहीं था। अवश्य ही राजकुमार सिद्धार्थ यह तर्क प्रस्तुत करता रहा होगा कि चक्रवर्ती सम्राट बन कर मैं लोगों का कितना भला कर पाऊंगा? जबकि सम्यक संबुद्ध बन कर केवल अपने आपको ही मुक्त नहीं कर लूंगा, बल्कि अपने परिवार को तथा अन्य अगणित प्राणियों को भवसंसरण के दु:खों से पूर्णतया मुक्त होने में सहायक बन सकूंगा।

इस लोक कल्याणकारिणी मनोवृत्ति के विरुद्ध क्या तर्क होता भला? यशोधरा इस जनकल्याणी विचारधारा का क्या विरोध करती? क्यों विरोध करती? कल्पों पूर्व जब सिद्धार्थ गौतम ने तापस सुमेध के रूप में भगवान दीपंकर सम्यक संबुद्ध से आशीर्वाद प्राप्त किया था कि वह आगे जाकर (चार असंखेय्य एक लाख कल्प के बाद) सिद्धार्थ गौतम के नाम से सम्यक संबुद्ध बनेगा, तब यशोधरा ने भी तत्कालीन ब्राह्मणपुत्री के रूप में उनसे यही आशीर्वाद प्राप्त किया था कि वह जन्म-जन्मांतरों में धर्मपत्नी बन कर इसका साथ देगी। अब इन दोनों का यह अंतिम जन्म था। वह पत्नी बनी तो सम्यक संबुद्ध बनने में सिद्धार्थ गौतम का साथ कैसे नहीं देती?

यशोधरा के पूर्वकाल की यह पृष्ठभूमि न होती और उसके मानस की गहराइयों में भगवान दीपंकर की भविष्यवाणी और आशीर्वाद का पावन बीज न होता, तब तो वह पति के त्यागने पर एक साधारण गृहणी की भांति विलाप करती। अपने भगोड़े पति को कोसती। अपने शृंगार का त्याग नहीं करती बल्कि अत्यंत सुंदरी, रूपवती राजकन्या होने के कारण किसी अन्य राजकुमार को चुन कर पुनर्विवाह कर लेती और सांसारिक सुख का जीवन जीती।

परंतु यशोधरा तो जन्म-जन्म की धर्मसंगिनी थी। ऐसा कैसे करती भला? खूब समझती थी कि किस महान उद्देश्य के लिए पति ने घर छोड़ा है। विलाप करने के स्थान पर उनकी सफलता की मंगल कामना ही करती रही।

आगे जाकर यशोधरा, महाप्रजापती के साथ भगवान से मिल कर भिक्षुणी संघ की स्थापना में सहायिका बनी। अनेक दुखियारी नारियों को संघ में सम्मिलित करवा कर उनके कल्याण में सहायिका हुई। स्वयं तो भवमुक्त अरहंत अवस्था प्राप्त कर अपना जीवन सफल किया ही, अनेकों को इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान की। ऐसी धर्ममयी थी राहुल-माता यशोधरा।

राहुल

महल के बरामदे में लाड़ले राहुल के साथ खड़ी राहुलमाता यशोधरा ने सामने राजपथ पर श्रमणसंघ के साथ चलते हुए उसके पिता भगवान बुद्ध का उसे परिचय दिया :—

एस हि तुय्ह पिता नरसीहो,
देख! यह जो नरों में सिंह के समान हैं, यही तेरे पिता हैं।
आयतयुत्तसुसण्ठितनासो,
देख! इनकी नासिका कितनी लंबी और सुडौल है।
गोपखुमो अभिनीलसुनेत्तो,
इनकी आंखें सुंदर नीले रंग की हैं और आंखों की बरौनियां बछिया की-सी हैं।
इन्दधनू अभिनीलभमूको,
इनकी श्यामवर्णी भौंहें इंद्रधनुष की आकृति के समान हैं।
वट्टसुवट्ट-सुसण्ठित-गीवो,
इनकी ग्रीवा गोलाकार है, सुगठित है।
सीहहनू मिगराजसरीरो,
इनकी ठोड़ी सिंह की-सी है। यही नहीं, इनका सारा शरीर सिंह के जैसा है।
कञ्चनसुच्छविउत्तमवण्णो,
इनके शरीर की सुंदर छवि स्वर्ण के समान उत्तम वर्णी है।
अञ्जनवण्णसुनीलसुकेसो,
इनके सुंदर केश सुरमे के समान काले हैं।
कञ्चनपट्टविसुद्धनलाटो,
इनका ललाट विशुद्ध कंचन के पट्टे के समान है,
ओसधिपण्डरसुद्धसुउण्णो,
इनके भौहों के बीच के बाल, औषधि तारे के समान हल्के पीले रंग के हैं।
पुण्णससङ्कनिभो मुखवण्णो,
इनका मुख-वर्ण आकाश में चमकते पूर्णिमा के चांद जैसा है।
देवनरान पियो नरनागो,
यह नररूपी गजराज मनुष्यों और देवताओं को प्रिय हैं।
खत्तियसम्भवअग्गकुलीनो,
यह अग्र क्षत्रिय कुल में जनमे हैं।

देवमनुस्सनमस्सितपादो,
सभी देव मनुष्य इनके चरणों की वंदना करते हैं।
सीलसमाधिपतिट्ठितचित्तो,
क्योंकि इनका चित्त शील-समाधि में भली प्रकार प्रतिष्ठित है।
गच्छतिनिलपथे विय चन्दो, तारगणापरिवेठितरूपो।
जिस प्रकार आकाश मार्ग में ताराओं से घिरा चंद्रमा गतिमान होता है,
सावकमज्झगतो समणिन्दो,
उसी प्रकार अपने श्रमण स्रावकों से घिरे हुए गतिमान हैं।
लोकहिताय गतो नरवीरो,
जो नरों में वीर हैं, जिन्होंने लोकहित के लिए गृह त्याग कर गमन किया है।
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो।
ऐसे हैं यह तेरे पिता, नरों में सिंह के समान।

— (विनयपिटक, सारत्थदीपनी टीका 3-105, राहुलवत्थुकथावण्णना)

जिस प्रसन्नचित्त से यशोधरा ने अपने पूर्व पति का परिचय पुत्र राहुल को दिया, उससे हम देखते हैं कि पति के गृहत्याग का उसके मन में न रोष है, न क्षोभ। बल्कि श्रद्धा और गर्व है कि जिस लोकहितार्थ गृह त्यागा, उसमें सफल हो गये और लोक कल्याण में लग गये। चाहती है कि उसके पुत्र के मन में भी यही भाव जागे। इसीलिए ऐसा सही और गरिमामय परिचय दिया।

राहुल की प्रव्रज्या

ममतामयी माता यशोधरा ने उसके पिता का परिचय देकर और पहचान बता कर पुत्र राहुल को कहा— "जा, अपने पिता से मिल और उनसे अपनी विरासत मांग। उनके पास स्वर्णरत्न से भरे चार घड़े हैं।"

स्वर्णरत्नभरे कौन से चार घड़े थे? ये जो चार आर्यसत्य हैं, जो कि स्वर्णरत्न से भी अधिक मूल्यवान हैं, जो कि वस्तुत: अनमोल हैं।

तभी कहा गया—

यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा, सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं।
न नो समं अत्थि तथागतेन, इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं॥

— (खुद्दकपाठपाळि- 6-3, रतन-सुत्तं)

— जो भी धन-संपत्ति यहां इस लोक में है, अथवा वहां अन्य लोकों में है और स्वर्ग में भी जो उत्तम रत्न-संपत्ति है, उनमें से कोई भी उसकी तुलना नहीं कर सकती, जो तथागत में है। बुद्ध में जो रत्न है वह अतुल है, अनमोल है।

बुद्ध में ये चार आर्यसत्यों के अनमोल रत्न हैं जो कि उन्होंने स्वयं अर्जित किये हैं, जिसे वे लोगों को बांट रहे हैं। इन पर तेरा अधिकार है। तू इनका वारिस है। यह तेरी विरासत है। जा, मांग उनसे।

यशोधरा मन-ही-मन सोचती है, "मैं भी इस अनमोल रत्न की विरासत प्राप्त करूंगी। परंतु कई कारणों से बुद्ध ने अभी भिक्षुणीसंघ की स्थापना नहीं की है। जब भी करेंगे तब मैं भी प्रव्रजित होकर इनके चरणचिह्नों का अनुगमन करके निकल पड़ूंगी और अपना उद्धार कर इनके 'लोकहिताय' अभियान में लग जाऊंगी। मेरा लाडला यहां राजमहल के वैभव-विलास में पल कर क्या प्राप्त करेगा? अपने पिता की कल्याणी छत्रछाया में पलेगा तो सद्धर्म का अनमोल रत्न प्राप्त कर लेगा। जीवन सफल कर लेगा। यह सोचते-सोचते, उसने अपने लाडले को विदा करते हुए कहा, "जा, बेटा! अपने पिता से विरासत मांग!"

राहुल प्रसन्नचित्त से भगवान के पास पहुँचा। पहुँचते ही उसे इतनी सुखद शांति और शीतलता का अनुभव हुआ कि बरबस ही उसके मुँह से निकल पड़ा —

"***सुखा ते, समण, छाया'ति***। — श्रमण, तेरी छाया सुखद है।"

भगवान की छत्रछाया किसको सुखद नहीं लगती? उनके सान्निध्य में सारे पाप-ताप दूर हो जाते हैं। पुत्र ने पिता की ऐसी सुखद शांतिप्रद छत्रछाया प्राप्त की। पिता ने पुत्र को धर्मरत्न की अनमोल विरासत दी। उसे सारिपुत्र के हवाले कर, वहीं प्रव्रज्या दिलवायी।

धर्ममय वातावरण में पलता हुआ राहुल बड़ा हुआ और विपश्यना साधना सीख कर, अभ्यास करते-करते अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली। धन्य हुआ राहुल! धन्य हुई राहुल को मिली अनमोल विरासत!

कल्याणमित्र,
सत्य नारायण गोयन्का

प्रश्नोत्तर सतिपट्ठान शिविर के

प्रश्नः कलाप (भौतिक पदार्थ की सबसे छोटी अविभाज्य इकाई) कहाँ से उत्पन्न होते हैं और वे किसमें नष्ट हो जाते हैं? कुछ नहीं से तो कुछ नहीं उत्पन्न हो सकता?

श्री गोयन्काजी: ब्रह्मांड की शुरुआत कहां से हुई और कैसे हुई, ये सब अटकलें हैं, जहां से सभी दार्शनिक मान्यताएँ शुरू होती हैं। बुद्ध ने उन्हें अप्रासंगिक प्रश्न कहा। उनका दुःख, उसके उत्पन्न होने, उसके उन्मूलन और उसके उन्मूलन के रास्ते से कोई लेन-देन नहीं है। सृष्टि हर पल चल रही है, कल्प बनते जाते हैं, वे उत्पन्न होते हैं और व्यय हो जाते हैं, और उत्पन्न और नष्ट होने की अज्ञानता ही दुःखों को जन्म देती है। बाकी सब अर्थहीन है। मानव जीवन बहुत छोटा है और आपके पास इतना बड़ा काम है— अपने अंतर्मन की आदत को सबसे गहरे स्तर पर बदल कर दुःखों से पूर्ण मुक्ति पाना। इसलिए समय बर्बाद न करें, काम करें, तब स्वयं अपनी अनुभूति से वास्तविक सत्य का दर्शन हो जायगा।

प्रश्नः मन और भौतिक पदार्थ के इस संसार के अस्तित्व के पीछे क्या कारण है?

श्री गोयन्काजी: अविद्या ही संस्कार (मानसिक प्रतिक्रिया, मानसिक स्वभाव) उत्पन्न करती है, और संस्कार अविद्या का संवर्धन करते हैं। इस आपसी सहयोग से ही सारा ब्रह्मांड बना है, और कुछ नहीं।

प्रश्नः अज्ञानता की शुरुआत कैसे हुई? यह प्रेम, विद्या और ज्ञान के साथ सह-अस्तित्व में नहीं हो सकती थी?

श्री गोयन्काजी: जरूर, लेकिन इस क्षण की अज्ञानता को देखना और शुद्धता प्राप्त करना अधिक महत्त्वपूर्ण है। अन्यथा यह एक दार्शनिक प्रश्न बन जाता है, जो मदद नहीं करता।

(श्री सत्यनारायण गोयन्का द्वारा सतिपट्ठान शिविर, दिवस सात के प्रश्नोत्तर से साभार)

ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन

सभी भावी शिविरों की जानकारी नेट पर निम्न लिंक्स पर उपलब्ध हैं। सभी प्रकार की बुकिंग ऑनलाइन ही हो रही है। अतः आप लोगों से निवेदन है कि धम्मगिरि के लिए निम्न लिंक पर चेक करें और अपने उपयुक्त शिविर के लिए अथवा सेवा के लिए सीधे ऑनलाइन आवेदन करें: https://www.dhamma.org/en/schedules/schgiri

विश्वभर के सभी भावी शिविरों की जानकारी एवं आवेदन के लिए:
https://schedule.vridhamma.org एवं www.dhamma.org
अथवा-https://www.dhamma.org/en-US/locations/directory#IN

अति महत्त्वपूर्ण सूचना

सेंट्रल आईवीआर (इंटरैक्टिव वॉयस रिस्पांस) संभाषण नंबर: 022-50505051 आवेदक इस नंबर पर अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर (फॉर्म में उल्लिखित नंबर) से अपनी शिविर पंजीकरण स्थिति की जांच करने, रद्द करने, स्थानांतरित करने या किसी भी केंद्र पर बुक किए गए अपने आवेदन की पुष्टि करने के लिए कॉल कर सकते हैं। वे इस सिस्टम के जरिए केंद्र से संपर्क भी कर सकते हैं। यह भारत के सभी विपश्यना केंद्रों के लिए एक केंद्रीय संपर्क नंबर है।

मुंबई महानगर क्षेत्र में विपश्यना संबंधी गतिविधियां

मुंबई महानगर एवं आसपास के क्षेत्रों में कई विपश्यना केंद्र और ध्यान की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इनके बारे में विस्तृत जानकारी के लिए कृपया निम्न लिंक को देखें:

https://mumbai.vridhamma.org/

इसी प्रकार **पूरे भारत में 1-दिवसीय शिविर और सामूहिक साधनाओं** के लिए कृपया इस लिंक पर क्लिक करके देखें: https://www.vridhamma.org/1-day-Courses-Information-in-India

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

1. श्री विनोद वतनी, (व.स.आ.), धम्म अजन्ता, औरंगाबाद के लिए केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा

नये उत्तरदायित्त्व

आचार्य

1. श्री ए. सुब्रमनियम, चेन्नई

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री शिवराम संपत वाघ, जलगांव

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री सुरेश वैरागदे, रायपुर
2. श्री विशाल कांबले, सतारा
3. डॉ. अपेक्षा खोब्रागडे, नागपुर
4. श्री कल्पेश पटेल, महेमदाबाद (गुजरात)
5. श्री रतनशीभाई पटेल, नवसारी (द.गु.)
6. श्रीमती संगीता ताजी, जालना
7. श्री गोविंद सभय, राजकोट
8. श्री अविनाश चिंचोलिकर, औरंगाबाद
9. श्री बिशका चकमा, मिजोरम
10. श्री मोहन रामचंद्रन, चेन्नई
11. श्री सिद्धार्थ सोनकाम्बले, कच्छ
12. श्री सुनील कुलकर्णी, नांदेड़
13. श्री शाम आठवले, अकोला
14. श्री सुनील कुमार सिन्हा, बिहार
15. डॉ. इला ठकरार, सूरत

बालशिविर शिक्षक

1. श्री एस. के. कुमारन, मदुराई
2. श्री एम. गणेशन, मदुराई
3. श्री एम. सुधाकर, चेन्नई
4. श्रीमती आनंदवल्ली, चेन्नई
5. श्रीमती सावरी प्रसन्ना साइमन, चेन्नई
6. श्रीमती राजेश्वरी ए., चेन्नई
7. श्रीमती गौतमा मीना, चेन्नई
8. Ms. Natratamon Kaweera, Thailand
9. Mr. Yuichiro Harada, Japan

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक दिवसीय महाशिविर (Mega Course) कार्यक्रमः

1. **रविवार**- 15 जनवरी, 2023 पूज्य माताजी की पुण्यतिथि (5 जन.) एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्यतिथि (19 जन.) के उपलक्ष्य में।
2. **रविवार**- 07 मई, 2023 बुद्ध-पूर्णिमा के उपलक्ष्य में।
3. **रविवार**- 02 जुलाई, आषाढ़-पूर्णिमा (धम्मक्कपवत्तन दिवस) के उपलक्ष्य में।
4. **रविवार** 01 अक्टूबर को शरद-पूर्णिमा तथा पूज्य गोयन्काजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिन

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—*समग्गानं तपोसुखो*। **संपर्कः 022 50427500 (Board Lines)** - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644 (पूर्वाह्न 11 बजे से सायं 5 बजे तक).** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक)

Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register

Email: oneday@globalpagoda.org

सूचनाः कृपया पीने के पानी की बोतल अपने साथ लायें और पगोडा परिसर में उसे भर कर अपने साथ रखें।

'धम्मालय' विश्राम गृहः एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम की सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or email- info.dhammalaya@globalpagoda.org

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्कः

info@globalpagoda.org or pr@globalpagoda.org

दोहे धर्म के

बुद्ध रतन-सा जगत में, अन्य रतन ना कोय।
सत्य वचन के तेज से, धरम प्रकाशित होय॥

धरम रतन-सा जगत में, अन्य रतन ना कोय।
सत्य वचन के तेज से, धरम प्रसारित होय॥

संघ रतन-सा जगत में, अन्य रतन ना कोय।
सत्य वचन के तेज से, धरम प्रतिष्ठित होय॥

तीनों रत्नों में निहित, धरम रतन पहचान।
बिना धरम ना बुद्ध है, नहीं संघ यह जान॥

दूहा धरम रा

संबुध थारी बोधि रो, किसो' क मंगळ घोस।
सूत्यां नै जाग्रति मिलै, मदहोसां नै होस॥

बोधि महा महिमामयी, माटी सुवरण होय।
कांकर तो हीरा हुवै, पत्थर पारस होय॥

जागै बोधी चित्त मँह, हुवै दूर अग्यान।
बुद्ध रतन री सरण री, या सांची पहचाण॥

बोधि रतन जीं नै मिल्यो, सुद्ध बुद्ध है सोय।
सत्य बचन रै तेज स्यूं, बहु जन रो हित होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2566, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 08 दिसंबर, 2022

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 25 NOVEMBER, 2022, DATE OF PUBLICATION: 08 DECEMBER, 2022

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org